अक्टूबर-दिसंबर में 30% कम रहा चीनी का उत्पादन

[एजेंसी | नई दिल्ली]

देश में चीनी उत्पादन सितंबर में शुरू हुए मार्केटिंग ईयर के पहले तीन महीनों में 30.22 पर्सेंट की बड़ी गिरावट के साथ 77.9 लाख टन रहा। चीनी उद्योग ने गुरुवार को यह जानकारी देते हुए कहा कि उत्पादन में गिरावट के बावजूद चीनी का मिल भाव मजबूत है जिससे मिलों को किसानों के गन्ना बकाए का भुगतान करने में आसानी हो रही है। भारतीय चीनी मिल संघ (इस्मा) ने कहा कि चालू पेराई सत्र में दिसंबर 2019 के अंत में तक कुल चीनी उत्पादन 77.9 लाख टन रहा। चीनी का उत्पादन मार्केटिंग ईयर 2018-19 (अक्टूबर-सितंबर) की इसी अवधि में 111.7 लाख टन था। इस्मा ने बाजार के आंकड़ों के हवाले से कहा कि चीनी निर्यात की रफ्तार अच्छी है। उसने कहा कि चीनी मिलों ने अभी तक सरकार के MAEQ (अधिकतम स्वीकार्य निर्यात मात्रा कोटा या 'मैक्सिमम एडमिशेबल एक्सपोर्ट क्वांटिटी कोटा') के तहत करीब 25 लाख टन चीनी के निर्यात का कॉन्ट्रैक्ट किया है। इस्मा ने कहा कि चीनी का एक्स-मिल प्राइस उत्तर भारत में 3,250-3,350 रुपये प्रति क्विंटल है और दक्षिण भारत में 3,100-3,250 रुपये प्रति क्विंटल के दायरे में स्थिर बना हुआ है। इस्मा ने एक बयान में कहा, 'केंद्र ने 2019-20 के लिए फेयर रिम्यूनरेटिव प्राइस (FRP) में बढ़ोतरी नहीं की है। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और पंजाब जैसे राज्यों में भी स्टेट एडमिनिस्टर्ड प्राइस (SAP) नहीं बढ़ा है। इसलिए चीनी का एक्स-मिल प्राइस स्थिर बना हुआ है और चीनी मिलें किसानों को समय पर गन्ने के दाम का भुगतान करने के लिहाज से बेहतर स्थिति में हैं।' इस्मा ने अपने पहले अनुमान में इस साल चीनी का उत्पादन 260 लाख टन रहने का अनुमान लगाया है। वर्ष 2018-19 में उत्पादन 331.6 लाख टन था। चीनी उत्पादन का दूसरा अनुमान अगले महीने जारी किया जायेगा। देश के सबसे बड़े चीनी उत्पादक राज्य महाराष्ट्र में चीनी का उत्पादन दिसंबर 2019 तक घटकर 16.5 लाख टन रह गया, जहां पिछले साल इसी अवधि में 44.5 लाख टन का उत्पादन हुआ था। बाढ़ से प्रभावित गन्ने की फसल में सुक्रोज की मात्रा कम होने से महाराष्ट्र में चीनी की एवरेज रिकवरी एक साल पहले के 10.5 प्रतिशत से घटकर 10 प्रतिशत रह गई है।

Economic Times

3/1/20